अमृत वाणी

सभ्यता की एकमात्र कसौटी है सहनशीलता।

आर्थर हैल्पस

राज-काज

वादा-खिलाफी के खिलाफ

शिकायत यह है कि 2021 में किसान आंदोलन खत्म कराने के समय सरकार ने जो वादे किए थे, उन्हें पूरा नहीं किया। तो अब किसानों ने फिर संघर्ष छेड़ने का इरादा जताया है। इस इरादे को जताने के लिए बड़ी संख्या में किसान दिल्ली के रामलीला मैदान पहुंचे। दिल्ली में फिर किसानों का फिर जमावड़ा लगा। उनकी शिकायत यह है कि 2021 में किसान आंदोलन खत्म कराने के समय सरकार ने जो वादे किए थे, उन्हें पूरा नहीं किया। तो अब किसानों ने फिर संघर्ष छेड़ने का इरादा जताया है। इस इरादे को जताने के लिए बड़ी संख्या में किसान दिल्ली के रामलीला मैदान पहुंचे। इसके बाद उन्होंने जमीनी स्तर से लेकर राष्टीय स्तर तक संघर्ष के कार्यक्रम का एलान किया है। इस दौरान किसान केंद्र सरकार से संयुक्त किसान मोर्चा को 9 दिसंबर 2021 को दिए गए लिखित आश्वासनों को पूरा करने की मांग करेंगे। साथ ही किसानों के लगातार बढ़ते संकट के समाधान के लिए प्रभावी कदम उठाने की मांग की जाएगी। किसानों की एक पुरानी मांग स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के अनुसार सभी फसलों पर एमएसपी की गारंटी के लिए कानून बनाने की है। किसान सरकार की तरफ से बनाई गई उस कमेटी से असंतुष्ट हैं, जो किसान आंदोलन खत्म होने के बाद बनी थी। संयुक्त किसान मोर्चा का आरोप है कि केंद्र सरकार द्वारा एमएसपी पर गठित समिति और इसका घोषित एजेंडा किसानों की मांगों के विपरीत है। कृषि संकट में है, इसमें दो राय नहीं है। हाल में महाराष्ट में प्याज किसानों की जैसी मुसीबत हुई, वह देश भर के मीडिया में सुर्खियों में आई। उसी के बाद महाराष्ट के किसानों ने नासिक से मुंबई तक का मार्च शुरू किया। फिलहाल, तो राज्य सरकार ने उनकी मांगें मान ली हैं। लेकिन उन पर अमल होगा, यह देखने की बात होगी। राष्टीय स्तर पर किसान बिजली संशोधन विधेयक- 2022 को वापस लिए जाने की मांग भी कर रहे हैं। इसके अलावा लखीमपुर खेरी जिले के तिकोनिया में चार किसानों और एक पत्रकार की हत्या के मामले में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी को कैबिनेट से बाहर करने की मांग भी उन्होंने दोहराई है। इस मांग का संदर्भ राजनीतिक है। लेकिन किसानों की बाकी मांगों पर सहानुभूति से विचार की जरूरत है। यह दीगर बात है कि वर्तमान सरकार के तहत प्रवृत्ति मोटे तौर पर ऐसी मांगों को खारिज करने की ही रहती है।

सत्र के बाद भी बना रहेगा मुद्दा

सवाल है कि संसद का बजट सत्र समय से पहले समाप्त हो जाने के बाद क्या भाजपा और कांग्रेस के उठाए मुद्दे समाप्त हो जाएंगे? इसकी संभावना कम है। सत्तापक्ष और विपक्ष ने जो मुद्दा उठाया है वह सिर्फ संसद सत्र को ध्यान में रख कर नहीं उठाया गया है। इसे आगे की राजनीति को ध्यान में रख कर उठाया गया है। भारतीय जनता पार्टी लंदन में दिए भाषण के बहाने राहुल गांधी को देश विरोधी साबित करने में लगी है। देश के अपमान का मुद्दा बना कर उनसे माफी मांगने को कहा जा रहा है, जबकि अगर उन्होंने संसद से बाहर कोई देश विरोधी बात कही है तो उनके ऊपर देशद्रोह का आपराधिक मुकदमा चलना चाहिए। लेकिन बात बात में राहुल के खिलाफ मुकदमा कराने वाली भाजपा ऐसा नहीं कर रही है। वह इसे राजनीतिक मुद्दा बनाए रखेगी। कर्नाटक से लेकर आगे होने वाले हर राज्य के चुनाव में इसे मुद्दा बनाया जाएगा। इसी तरह विपक्ष को लग रहा है कि अदानी समूह के खिलाफ आए हिंडनबर्ग रिपोर्ट से उसको बोफोर्स या 2जी जैसा कोई बड़ा मुद्दा मिल गया है। विपक्ष इसे लोकसभा चुनाव का ब्रह्मास्त्र मान रहा है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों को लग रहा है कि अदानी समूह की करीबी का प्रचार करके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कई एजेंडे को ध्वस्त किया जा सकता है। राहुल गांधी पिछले चुनाव से 'चौकीदार चोर है' का नारा लगा रहे थे लेकिन तब उनके पास कोई स्पेशिफिक गड़बड़ी का सबूत नहीं था। अब हिंडनबर्ग की रिपोर्ट और शेयर बाजार में अदानी समूह का 12 लाख करोड़ रुपया डूबने से उनके हाथ सबूत लगा है। संदिग्ध कंपनियों के रक्षा सौदों में शामिल होने की खबरे हैं। सो, विपक्ष भी इस मुद्दे को नहीं छोड़ेगा। बहरहाल, संसद का अगला सत्र कर्नाटक विधानसभा के चुनाव के बाद होगा और कर्नाटक के नतीजों से तय होगा कि संसद में क्या माहौल रहेगा।

संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग

वर्तमान केंद्रीय सरकार पर आरोप है कि वह विभिन्न संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग करके विपक्ष पर झूठे मुकदमे दायर करवा देता है इंफोर्समेंट डायरेक्टोरेट (श्वष्ठ) पर यारों बहुत ज्यादा है । अब आज अरविंद केजरीवाल पर भी आ गई है कि दिल्ली के शराब घोटाले में अर्जित पैसा गोवा के विधानसभा चुनाव में इस्तेमाल हुआ था, ऐसा नया आरोप ई.डी. ने लगाया है । शायद जल्दी ही अरविंद केजरीवाल को अरेस्ट कर लिया जायेगा । मौजूदा केन्द्र सरकार ने ई.डी. का इस्तेमाल अपने राजनीतिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिये किया हो। तमाम सरकारों के दौरान ऐसा होता रहा है, लेकिन राजग सरकार के दौरान इसकी आवृत्ति बढ़ी है। विपक्षी नेता आरोप लगाते रहे हैं कि केंद्र ईडी को 7 राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग कर रहा है। ऐसे में दिल्ली हाईकोर्ट की यह नसीहत तार्किक व मार्गदर्शक है कि कानून उसे यह हक नहीं देता कि वह मनमाने ढंग से किसी की प्रतिष्ठा से खेले, उन्हें परेशान करे या किसी तरह का दबाव बनाये। अदालत ने साफ कर दिया कि उसे सिर्फ और सिर्फ धनशोधन के मामले में ही कार्रवाई करने का कानूनी हक है। वह महज अनुमान के आधार पर किसी पर कोई आरोप नहीं लगा सकती। यदि ऐसा कोई प्रयास होता है तो कानून के दायरे में ही उसकी सुनवाई होनी चाहिए । दरअसल, हाईकोर्ट ने ऐसी याचिकाओं पर सुनवाई की थी जिसमें धनशोधन की स्पष्ट स्थिति न होते हुए भी ईडी ने कार्रवाई की थी। आरोप लगते रहे हैं। कि प्रवर्तन निदेशालय ने कई मामलों में विभाग के कार्यक्षेत्र से बाहर वाले मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप किया है। यही वजह है कि ई.डी. की दखल के बावजूद कोई धनशोधन का मामला उजागर नहीं हो सका। महज इस शक पर कि आय से अधिक की संपत्ति वाले मामले में धनशोधन का एंगल भी हो सकता है। कोर्ट का मानना है कि अन्य विभाग की जांच में यदि धनशोधन का मामला उजागर होता है तो ई.डी. दखल दे सकती है। गाहे- बगाहे ई.डी. की कारगुजारियों को लेकर सवाल उठते रहे हैं। यह मामला विगत में शीर्ष अदालत के पास भी पहुंचा था। तब भी कोर्ट ने उसके गिरफ्तारी व जब्ती के अधिकार को तो माना था लेकिन साथ ही नसीहत भी दी थी कि उसे अपने दायरे में रहकर ही काम करना होगा ।

अजय दीक्षित

प्राचीन अनाज भंडारण पद्धति कोठ्यार लुप्त होने के कगार पर

> भारत एक कृषि प्रधान और अनाज के मामले में आत्मनिर्भर देश है। अनाज भंडारण आज भी हमारे देश में एक विकट समस्या ही है और भंडारण की समुचित व्यवस्था न होने के कारण बहुत सा अनाज खराब हो जाता है। अन्न को वैसे भी भारतीय संस्कृति में ब्रह्म का दर्जा दिया गया है।

आइए हम जानते हैं कि प्राचीन समय में हमारे यहाँ के किसान किस प्रकार से बुआई.कटाई से ले कर अनाज के भण्डारण तक की समुचित व्यवस्था करते थे, जिसे आज भी अपनाये जाने की आवश्यकता है ताकि अनाज को खराब या बर्बाद होने से बचाया जा सके।प्राचीन समय से ही हमारी कृषि पशुपालन के साथ ही हमारे देश की अनाज भंडारण व्यवस्था बहुत ही विकसित और उन्नत थी।सिंधु घाटी सभ्यता में अन्न भंडार हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के शहरों में पाए गए थे। वास्तव मेंए सच तो यह है कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से पता चला कि साढ़े चार हजार साल पहले सिंधु घाटी की सभ्यता में गेहूं की खेती हो रही थी और उस समय तब गेहूं के भंडारण की भी क्षमता प्राप्त कर ली गई थी। जानकारी मिलती है कि 2600 ईसा पूर्व आते आते नगरों की शुरुआत हो गई थी और इसी काल में लोगों ने बड़ी.बड़ी दीवारें और चारदीवारी बनाकर अनाज के भंडारण की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। यहाँ तक कि मिट्टी के बर्तन बनना भी अब तक शुरू हो चुके थे। वास्तव मेंए हमारी प्राचीन सभ्यता आहड़ सभ्यता.संस्कृति में अनाज रखने के बड़े मृदभांड ;मिट्टी से बने बरतनद्ध प्राप्त हुए हैं। इन मृदभांडों को श्गोरे बंकोठ कहा जाता था। वैसे कालीबंगा पुरास्थल में श्जुते हुए खेत मिले हैं। समय काल व परिस्थितियों के साथ साथ हमारे देश की प्राचीन संस्कृतिए धार्मिक परम्परा व रीति रिवाजों में आमूल चूल परिवर्तन आए हैं। लेकिन गांवों में आज भी कई रीति रिवाज व परम्पराएं सदियों से चली आ रही है। अनाज भंडारण परंपरा भी इनमें से एक है। अनाज भंडारण के लिए प्राचीन समय में टोकरियों बोरियों और जार मृदभांड आदि का उपयोग किया जाता था। कुछ समुदायों के पास एक अलग गोदाम;मिट्टी गोबर चिकनी मिट्टी के लेप से बनाद्ध होता था जहाँ वे एक बड़े ढेर में अनाज रखते थे। प्राचीन काल में और आज भी बहुत से गांवों में बाजरा गेहूं मोंठ मूंग व अन्य अनाजों को गोबर चिकनी मिट्टी व लकड़ियों घास.फूस से बनी कोठियों जिन्हें राजस्थान के ग्रामीण इलाकों विशेषकर चूरू झुंझुनूं सीकर शेखावाटी में श्कोठी या कुठला के नाम से जाना जाता है में वर्षों तक सुरक्षित भंडारण किया जाता था। कोठी के अनाज में राख मिलाकर कीट.कीटाणुओं से बचाकर रखा जाता है। वहीं इसके निचले हिस्से में एक छेद रखा जाता है, जिससे अनाज को आवश्यकतानुसार उपयोग में लिया जाता है। कोठी के ऊपर के भाग से अनाज को रखा जाता है। राजस्थान के गांवों में आज भी अनेक स्थानों पर इन मिट्टी गोबर चिकनी मिट्टी के लेप से बनी कोठियों तीज. त्यौहारों व विभिन्न अवसरों पर इन पर मांडने;पशु.पक्षी फूल.पत्तियाँ बेल, मोर,रंगोली, हाथी अल्पना बनाए जाते हैं। इस झोपड़ीनुमा अनाज कोठी कुठला को घास से ढ़ककर इसकी साज.सज्जा की जाती थी। आकृति में यह बीच में से पेट की तरह मोटाए और ऊपर व नीचे से पतला रखा जाता था और इसका आधार जमीन पर टिका रहता था। राजस्थान के चूरू सीकर झुंझुनूं जिलों के साथ सरदारशहर;चूरू में आज भी मिट्टी से बने कुठले देखने को मिल जायेंगे। वैसे प्राचीन समय में ओबरी या श्ओबरोंश् में भी अनाज रखा जाता था लेकिन ओबरी में चार या पांच पाये होते हैं और ये पाये अंदर से थोथे ;यानी कि खालीद्ध रखे जाते थे और इनमें अनाज भर दिया जाता था। ओबरी के एक किवाड़;लकड़ीद्ध भी रखा जाता था। प्राचीन समय में ओबरियों कुठलों में बारिश व आंधी में भी अनाज सुरक्षित रहता है। चूहों से व अन्य जीव.जंतुओं से भी अनाज की सुरक्षा होती थी।

स्थानीय भाषा में इन्हें कोठ्यार अनाज भंडारण गृह कहा जाता है। वैसे आज भी गांव घरों में शादी.ब्याह में मिठाई रखे जाने वाले कमरों स्थान को भी कोठ्यार कहा जाता है। राजस्थान ही नहीं पहाड़ी क्षेत्रों में भी इनमें;कुठलों कोठ्यारों ओबरों धान गेंहू कोदू झंगोरा चौलाई या दालें सुरक्षित रखी जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों में इन्हें ;कोठ्यार श्कोल्ड स्टोर भी कहा जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों व राजस्थानी क्षेत्र के कोठ्यार में फर्क सिर्फ़ इतना होता है कि राजस्थान में ये मुल्तानी मिट्टीए गोबर घास फूस हल्की लकड़ी के बने होते हैं जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में ये कोठार देवदार की लकड़ी से बनाए जाते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में भी इन पर शानदार नक्काशी की जाती है। इन कोठ्यार की भंडारण क्षमता भी अद्भुत होती है क्योंकि देखने में बहुत छोटे दिखने के बावजूद इनमें काफी मात्रा में अनाज का भंडारण किया जा सकता है। इन कोठ्यारों का दरवाजा बहुत ही छोटा.सा होता है और ताला भी होता है। ताला खोलने के लिए एक लंबी छड़नुमा आकर की चाबी होती है। इन कोठ्यारों का ताला खोलना हर किसी की वश की बात नहीं होती है और ताला बड़ी तरकीब के साथ खोलना होता है। कोठ्यार या कोठार अथवा कुठार की सबसे खास बात यह होती है कि इसके दरवाजे से मुख्य घर से एक सांगल चेन बंधी रहती है और उसमे बीच.बीच में घंटियां भी बंधी रहती हैं ताकि यदि कोई चोर चोरी करने के इरादे से कुठार में घुसने की कोशिश भी करेगा तो घर के लोगों को पता चल जाता है कि चोरी होने वाली है। इस प्रकार से सुरक्षा की ये अनोखी तरकीब होती थी लेकिन आज कुठार बहुत कम देखने को मिलते हैं। वास्तव में प्राचीन समय मेंए अनाजए खाद्यान्न आदि के भंडारण का जो तरीका हमारे बुजुर्गों ने ईजाद किया था वो आज तक भी बड़े से बड़े इंजीनियर और विज्ञान भी नहीं कर पाया हैं। लकड़ी के इस भंडार गृह में न तो कीड़े पड़ने की संभावना रहती है न कोई फफूंदए शैवाल लगने की। वास्तव में इन भंडार गृहों में कुठार हमारी लोक संस्कृति की झलक देखने को मिलती थी लेकिन आज गांव घरों में ये नहीं बचे हैं। आज इनके स्थान पर लोहे की टंकियांए कंक्रीट के बने गोदाम आ गये हैं। प्राचीन ;आदिम अन्न भंडारद्ध प्रायः मिट्टी के बर्तनों से बनाए जाते हैं।

सुनील कुमार महला

(ये लेखक के अपने विचार है)

पंजाब के चिंताजनक हालात-अधिक सावधानी और सतर्कता की आवश्यकता

पंजाब में अमृतपाल एवं उसके साथियों के विरुद्ध कार्रवाई से पूरे देश ने राहत महसूस किया है। अमृतपाल के चाचा सहित उसके प्रमुख साथियों को मिलाकर डेढ़ सौ से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है । इसे पूरी तरह दुरुस्त आयद न कहें देर आयद कह सकते हैं । पिछले करीब 6 महीने से अमृतपाल की गतिविधियों ने पूरे पंजाब और वहां नजर रखने वाले सभी को भयभीत कर दिया था। अमृतपाल की हरकतों को पहले ही सख्ती से रोक दिया जाता तो नौबत यहां तक नहीं आती। उस पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून यानी एनएसए लगाकर लुकआउट सर्कुलर जारी करना पड़ा है। हरियाणा एवं पंजाब उच्च न्यायालय की तीखी टिप्पणियां मुख्यमंत्री भगवंत मान सहित पंजाब सरकार एवं आम आदमी पार्टी को भले नागवार गुजर रही हो किंतु सच्चाई तो यही है। न्यायालय ने पूछा है कि आखिर 80 बजार पुलिस क्या कर रही थीघ् वास्तव में 23 फरवरी को अमृतसर जिले के अजनाला थाने का पूरा दृश्य आतंकित करने वाला था। हजारों लोग जिस तरह थाने को बंधक बनाकर पुलिस वालों पर ईंट पत्थर बरसा रहे थे उस पर पहली नजर में यकीन करना कठिन था। ऐसा नहीं है कि अमृतपाल के साथियों के भारी संख्या में पहुंचने और उधम मचाने की सूचना खुफिया एजेंसियों को नहीं थी। पंजाब सरकार ने खतरे को देखते हुए भी कार्रवाई से बचने की खतरनाक आत्मघाती प्रवृत्ति अपनाई थी। पूरे देश को आश्चर्य हुआ जब थाने पर हमले के बाद पुलिस ने तूफान सिंह को रिहा करने की घोषणा कर दी जिस पर अपहरण कर मारपीट करने का आरोप था। हालांकि बाद में वह न्यायालय के आदेश से ही रिहा हुआ पर पुलिस ने उसकी जमानत का विरोध नहीं किया। स्थानीय वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक का बयान था कि अमृतपाल ने जो जानकारी दी उसके अनुसार तूफान सिंह घटनास्थल पर था ही नहीं। यानी पुलिस के लिए अमृतपाल के साक्ष्य मान्य हो गए थे।

ध्यान रखिए वर्तमान कार्रवाई मुख्यमंत्री भगवान सिंह मान की केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के बाद हो रही है। इसका अर्थ बताने की आवश्यकता नहीं । पुलिस की वर्तमान चुस्ती और सख्ती बताती है कि पहले भी ऐसा हो सकता था। जम्मू कश्मीर के बाद पंजाब ऐसा सीमावर्ती राज्य है जहां हिंसा व अलगाववाद ने पूरे देश को लंबे समय तक दहलाया है। आतंकवाद ने वहां 70 हजार से ज्यादा लोगों की जानें ली है। सीमा पार पाकिस्तान से हो रहे षड्यंत्रों एवं अमेरिका यूरोप सहित अन्य देशों से अलगाववादियों मिल रहे सहयोग का ध्यान रखते हुए भगवंत मान सरकार की पहली प्राथमिकता सुरक्षा व्यवस्था ही होनी चाहिए थी। सरकार के व्यवहार से ऐसा कभी झलका नहीं। पूरे देश ने देखा जब खालिस्तानी झंडा लिए लोग सड़कों पर नारे लगा रहे हैं और पुलिस उन्हें सुरक्षा दे रही है। इससे अलगाववादियों . आतंकवादियों सहित पूरी दुनिया में भारत विरोधियों का हौसला बढ़ा होगा। अमृतपाल पिछले वर्ष सितंबर में दुबई से आया और धीरे.धीरे वह इतनी बड़ी हैसियत प्राप्त कर गया तो क्योंघ् पंजाब के आम लोगों को तो पता था कि वहां स्थिति बिगड़ रही है। क्या सरकार को इसका आभास नहीं थाघ्दमदमी टकसाल में जब अमृतपाल को भिंडरावाले की गद्दी दी जा रही थी तो उसकी सूचना निश्चय ही सरकार के पास पहुंची होगी। वहां का पूरा दृश्य डरावना था। भारत विरोधी और खालिस्तान समर्थक नारों से गूंजता कार्यक्रम हस्तक्षेप की मांग कर रहा था। इसलिए यह प्रश्न तो उठेगा कि सरकार आंखें मुद्दे क्यों रहीघ् यह संभव नहीं कि प्रदेश और केंद्र की सुरक्षा एजेंसियों ने आप सरकार के मुखिया और शिर्ष पुलिस प्रशासनिक अधिकारियों को पंजाब के अंदर और बाहर की गतिविधियों से सूचित नहीं किया होगा। विचार करने वाली बात है कि एक ट्रक ड्राइवर अमृतपाल अचानक दुबई से पंजाब लौटता है और धीरे.धीरे हीरो बन जाता है। उसके बोलने का अंदाजए उसकी तर्क शैली आदि स्पष्ट बता रहा था कि उसे पूरी तरह तैयार करके पंजाब भेजा गया। कहा जा रहा है कि वह आनंदपुर टास्क फोर्स बना रहा था। पंजाब पर काम करने वाले जानते हैं कि 1973 में आनंदपुर साहिब प्रस्ताव से ही वर्तमान खालिस्तान आंदोलन को हवा मिली थी। इसमें पंजाब को स्वायत्त प्रदेश बनाने की मांग की गई थी।

अवधेश कुमार

(ये लेखक के अपने विचार है)

सामयिक : बजट और राष्ट्रवादी विमर्श

आज सूचना के तमाम माध्यम इस लॉन्चिंग सिंड्रोम या फिनोमेना के शिकार हैं। यही कारण है कि सरकारों की नीति, राजनेताओं के वक्तव्य सब आज इंस्टेंट वेल्यू के साथ परोसे जा रहे हैं। आज हमारा कालबोध इतना इकहरा हो गया है कि हम किसी बात के संदर्भ को उसके उत्स और विकास प्रक्रिया के साथ देखना या तो भूल गए हैं, या फिर इसे गैर-जरूरी मान बैठे हैं। देश में बजट का मौसम चल रहा है। केंद्र और राज्यों के बजट प्रस्तावों के इर्द-गिर्द जो चर्चा इन दिनों चल रही है, उसका कंपास एक बार फिर तात्कालिकता के जोर पर ही तय हो रहा है। विचार के नाम पर बजट प्रस्तावों के विश्लेषण भर सामने आ रहे हैं, और इसी के साथ सामने आ रहा है फौरी अर्थबोध का कमजोर मानसिक ढांचा। इस बीच, जो बात उभर कर सामने आ रही है, वह यह कि बजट और सरकारों की आर्थिक प्राथमिकता अब ज्यादा केंद्रीय हैं। इस बात का महत्त्व इस अर्थ में समझना जरूरी है कि राजनीतिक विचार और वक्तव्यों के आधार मात्र पर हम सरकारों की कार्यनीति को समझने की भूल करेंगे तो बड़ी गलती होगी। तुर्रा यह कि राजनीतिक द्वेष, विरोध और प्रतिद्वंद्विता से अलग बजटीय विमर्श को जो कुछ केंद्रीय शब्द-पद चुंबकीय आकषर्ण और नियामकीय अनुशासन दे रहे हैं, वे कमोबेश एक से हैं। अगर इनके बीच कोई फर्क है तो वह यह कि इस आकषर्ण और अनुशासन के पीछे का मानस और प्रतिबद्धता कितना सघन या लचर है। केंद्रीय बजट के राष्ट्रीय महत्त्व से आगे आज देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश के सालाना बजट प्रस्तावों की चर्चा हो रही है तो इसलिए कि विकास और उदारीकरण के दौर के जो पहिए रास्ते में कहीं थक गए थे, वे फिर से रफ्तार भर रहे हैं। अर्थ और विकास का समावेशी तकाजा आज सर्वसमावेशी दरकार से जुड़े पैकेजिंग तक पहुंच गया है।

सुडोकू पहेली

क्रमांक- 4958

2	9			7	4			
	1					4		
6	7		9		5			
	8		2		6			
	6		8	4	7		2	
			5		1		8	
			7		8		9	2
		6					1	
			4	1			5	8

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 4957

1	8	5	7	4	9	2	3	6
7	9	4	2	6	3	8	5	1
3	6	2	8	1	5	7	4	9
9	4	7	1	3	8	5	6	2
5	2	1	9	7	6	3	8	4
8	3	6	5	2	4	1	9	7
6	1	3	4	5	2	9	7	8
2	5	8	6	9	7	4	1	3
4	7	9	3	8	1	6	2	5

वर्ग पहेली 4958

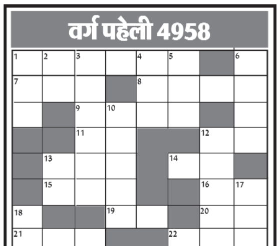

संकेत: बाएं से दाएं

1. केवल महिलाओं हेतु विश्व का सबसे बड़ा विश्व विद्यालय इस देश में स्थापित है (6)
7. यह मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कृति है जिस पर फिल्म (1966) निर्माण हुआ है (3)
8. सारी दुनिया का उलट-पलट (4)
9. भरोसा, विश्वास, यकीन (4)
11. किसी वस्तु, जगह आदि के अंदर (अंग्रेजी)(2)
12. बतौर नायक-नायिका यह ऋषि कपूर-डिम्पल कपाड़िया की पहली फिल्म थी (2)
13. यह ब्रिटेन देश का राष्ट्रीय पुष्प है, इसे अंग्रेजी में रोज कहते है (3)
14. चैत्र माह की फसल (2)
15. बलिदान, जिसे युद्ध में प्राण त्याग दिए हों (3)
16. जितना समय लगना चाहिए उससे अधिक समय, विलंब (2)
19. पैगंबर, ईशदूत, रसूल (2)
20. तुषार पात, ओसबिंदु जाल (2)
21. बृहत्तर एशिया के सबसे बड़े द्वीप कलुआ की राजधानी है (3)
22. बर्फ, जलवाष्प, नीरद (3)

ऊपर से नीचे

1. ठहरा प्रवाहहीन जल (3)
2. उकताहट, बैचेन, मनोरंजनहीन (2)
3. यशस्वी मुगल सम्राट अकबर द्वारा चलाया धर्म (6)
4. क्षेत्रफल, अहाता (3)
5. सचल वायु, अलमस्त हवा, बहती हवा (3)
6. स्वार्थी, खुदगर्ज (4)
10. यह गोविंदा अभिनीत पहली फिल्म थी (5)
12. धर्मेंद्र के अभिनेता पुत्र (5)
13. बदख्वाह, जिसके मन में कुछ और मुंह पर कुछ हो (उर्दू)(2)
17. कच्चा आहार पदार्थ, सामान, पूति (3)
18. एक शब्द जिसके द्वारा वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है (4)

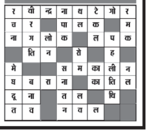वर्ग पहेली 4957 का हल